



तू जीता जा जीवन

शशिकांत निशांत शर्मा 'साहिल'

जब तक न हो मरण
तू जीता जा जीवन
तू कर दे समर्पण
अपना यह तन मन
अपना ये जीवन
दूसरों की कातिर
तेरा यश हो जायेगा अमर
कुछ नहीं हैं शाश्वत
बात सही हैं सत-प्रतिशत
आदमी कुछ नहीं ले जाता मरकर
आदमी छोड़ जाता हैं जीकर
उपकार परोपकार
सबसे बड़ा हैं हैं इंसानियत
मानवमात्र से मुहब्बत
जीवन हैं एक उपवन
और तय करना हैं हमें
बनना हैं एक सुमन
या एक कांटा!